ॐ सत्नाम साक्षी

शंभु सैलानी

प्रवचन

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण - १००० प्रतियां

उज्जैन कुम्भ मेला
मई-२०१६ सम्वत्-२०७३

ॐ

सत्नाम साक्षी

भूमिका

सतपुरुषों के मुखारविन्द से उच्चरित अमृतवाणी आनन्द और शान्ति प्रदायिनी होती है। अपने जीवन में अनुभूत सत्य को जब वे सत्संग प्रवचनों में सरल सरस भाषा में प्रकट करते हैं तो जिज्ञासु का हृदय प्रेमानन्द में मगन हो जाता है। सत्गुरु सर्वानन्द जी महाराज का जीवन एकान्तप्रियता एवं सादगी से भरपूर था। आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज में अटूट आस्था एवं अनन्य गुरु भक्ति उनकी रग रग में समाई हुई थी।

जिस प्रकार से उनका जीवन अनंत सद्गुणों से सुवासित था उसी प्रकार उनकी वाणी भी मनमोहक थी। मधुर कण्ठ से जब वे भजन गीत गाते थे तो भगवान श्री कृष्ण की मुरली सा आनन्द अनुभव होता था। उनकी अमृतवाणी का लघु पुस्तिका के रूप में प्रकाशन हो रहा है। इसे पढ़कर एवं हृदयंगम कर अपने जीवन को सत्मार्ग में लगाएं।

भगत प्रकाश

अमरापुर स्थान, जयपुर

जन्म मरण के चक्कर से छुटकारा दिलाती है अमर कथा

एक समय पार्वती ने भगवान शंकर से पूछा, भगवन्! एक बात तो बताओ कि आपने गले में मुंडों (खोपड़ी) की माला क्यों पहन रखी हैं? तब भगवान ने कहा पार्वती ये तुम मत पूछो। क्योंकि तुम्हें दुख होगा पार्वती मां ने जिद की। भगवान मुझे बताओ। तब भगवान शिव ने कहा, पार्वती ये मुंड तुम्हारे ही हैं। तुम्हारा अनेक बार जन्म हुआ और फिर तुम मृत्यु को प्राप्त हुई हो। तुम्हारे सिर के ही मुंड बनाकर मैंने पहन रखे हैं। तब पार्वती ने कहा! भगवन मेरी मृत्यु होती है पर आपकी मृत्यु नहीं होती।

तब भगवान शिव ने कहा मैंने ''अमर कथा'' सुनी है अमर कथा सुनने के बाद मनुष्य अजर अमर हो जाता है जन्म मरण के चक्कर से छूट जाता है। तब पार्वती ने भी भगवान से प्रार्थना की भगवान मुझे भी ''अमर कथा'' सुनाओ। तब भगवान शंकर ने माता पार्वती को पहाड़ की कन्दराओं में बैठकर ''अमर कथा'' सुनाई।

शंभु सैलानी

दोहा: बार बार वन्दन करूं-पूरण ब्रह्म अखण्ड।
जाँके सत् प्रकाश ते-प्रकाशत ब्रह्मण्ड।।
हरि हर गौरि गणेश रवि-सब को है प्रणाम।
जिनकी कृपा दृष्टि से-होवें पूरण काम।।
धरहूं सद्गुरु देव के-चरण कमल का ध्यान।
कह टेऊँ जिस कृपा ते-ऊज्ञा अनुभव भान।।

छन्द: कठ उपनिषद कविता माहीं करता हूं वख्याना जी।
यजुर्वेद की कथा पुरातन-करो अमीरस पाना जी।।
सावधान हो बैठ श्रोता-पूरण मन विश्वास धरो।
यमराज नचिकेत कथा को-सुनकर सबहीं दुख हरो।।
जिसके श्रवण मनन आदि से-जीव अमर हो जाता है।
कहता टेऊँ काल चक्कर में, फेर कभी नहीं आता है।।

प्रेम से बोलो हरे राम! सभी प्रेमियो, सत्संगियो, गुरुमुखो, पूजने योग्य महात्मा मण्डल अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करके हर एक जीव, हर एक मनुष्य अपने आप को स्वयं समझावे। प्रेम से बोलो हरे राम! जो पहले से समझते हैं, जानते हैं। उसको समझाना बहुत ही कठिन है, तो ये मन जानता है। पाप को, सच को, झूठ को, धर्म को, अधर्म को जानता है तो इसे समझाना बहुत कठिन है। प्रेम से बोलो हरे राम! एक ये बात! दूसरा ये ही भक्ति करनी है। मन को पवित्र शुद्ध करना। मन-इन्द्रियों को अपने वश में करना है। सत् शास्त्र महात्मा के वचनों में, भगवन्त के नाम में विश्वास बढ़ाना है। ये ही भक्ति करनी है। हम दो वारी पंक्ति कहें। पहले हम विश्वास को बढ़ायें, फिर सत् शास्त्र अटल विश्वास बढ़ायेंगें। क्या कहें ?

राम जपो हरवार - रे मन राम जपो

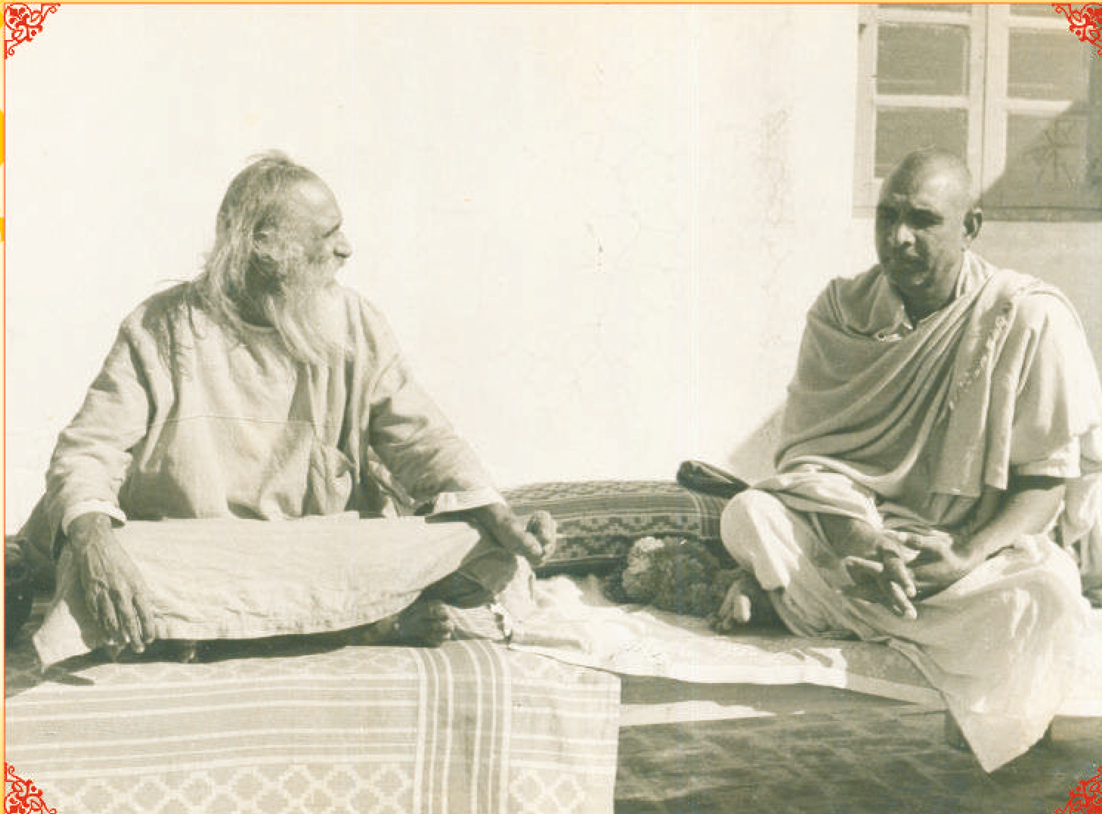

गज ने आधा राम उचारा - हरि ने आय ग्राह को मारा

होई जै जैकार ।। मेरे मन राम

गरज के बोलो श्री रामचन्द्र भगवान की जय। हे मेरे मन! हाथी की पुकार सुनकर, भगवान ने रक्षा की। निराश होकर भगवान को पुकारा तू अभी निराश नहीं हुआ है।

श्लोक: भिरीं भिनण वारियूं, उभियूं ओसारिन।
सजण जे सारीनि, से पिटण में पधिरियूं।।
भिरीं भिनण वारियूं, अची सियापो कनि।
ब्यूं उहें हथ हणनि, रूअन्दियूं रूअण वारियूं।।

प्रेम से बोलो हरे राम। अगर घर का कोई मरता है तो वह दूर से ही पता लगता है। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन! तेरे को मोह रूपी वागू

(मगरमच्छ) संसार के विषय रूपी भोगों में पाप कर्मों में खींच रहा है। तू कितना ही कहता है। मैं बाहर निकलूं। मोक्ष के मैदान पर चढ़ूं। पर ये मोह कहां छोड़ता है? बड़ा ही बलवान है। इतना बलवान है, ये मोह रूपी वागू (मगरमच्छ) जो अर्जुन जैसे वीर को भी रणभूमि में पकड़ा। अर्जुन छुड़ा नहीं सका। रो पड़ा। हथियार छूट गये। ये गीता किसी ने धर्म पर ज्ञान प्रेम पर बतायी है। परन्तु ये वास्तव में गीता मोह पर बनी हुई है। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन! जब तू भी निराश होकर पुकार करेगा। तभी ये भगवान अन्तर्यामी इस मोह रूपी वागू (मगरमच्छ) को मारकर आजाद कर देंगे। तेरी जय-जयकार होगी। लोक-परलोक बन जायेगा, जैसे नचिकेता ने विश्वास रखा है जो यमराज को कहता है भगवन् ! मेरे को आत्म ज्ञान का वर दे। यमराज कहता है। वो बात कठिन है देव भी घबरा गये। सूक्ष्म है। कोई-कोई

करता है। कोई समझता है तो करते नहीं हैं। ये बात ऐसे कैसे होगी। प्रेम से बोलो हरे राम।

और पदार्थ जितने चाहिए, उतने तुमको देता हूं।
मगर ज्ञान का वर यह तीसर, वापस तुमसे लेता हूं।।

हे नचिकेता! दूसरे जितने पदार्थ चाहिए। वे सारे पदार्थ मन इच्छित ले ले। ये वर ज्ञान का मुझको वापस दे। ये मेरे से मत पूछ। इतना कथा का प्रसंग होकर के आया है। आज के प्रसंग में सत्गुरु महाराज कहते हैं-गुरमुखो, जिज्ञासुओ जब इतना यमराज कहने लगा :-

दोहाः धर्मराज जब यूँ कहा, तीसर वर ये छोड़।
नचिकेता यम को तभी, कहन लगे कर जोड़।।

छन्दः आप कहत हो उसी विषय में, देवन को संदेह हुआ।
यह सुन आत्म में अब मेरा, और अधिक सनेह हुआ।।

यह भी तुमने कह समझाया, कठिन उसी को पाना है।
वैरागी तो उस देखन हित, जग में फिरत दिवाना है।।
तुमको तजकर ऐसा वर मैं, और किसी से पाऊँगा।
सारी दुनिया खोज-खोजकर, वृथा जन्म गंवाऊँगा।।

धर्मराज नचिकेता को कहने लगे। इस आत्मज्ञान के वर को छोड़ दो। तो यह जीव मरकर कहां जाता है? उसकी उधर गति क्या होती हैं? उधर है क्या?। ''नचिकेता यम को तभी कहन लगे कर जोड़।'' नचिकेता हाथ जोड़कर यमराज को कहने लगे-हे भगवन्! आप कहते हैं उसी विषय में देवों को भी संदेह हुआ। आप ही कहते हो कि इसकी बात में देवों को भी संशय हो गया।

''यह सुन आत्म में अब मेरा और अधिक स्नेह हुआ'' यह सुनकर उल्टा

मुझे अधिक स्नेह और निश्चय हुआ। प्रेम से बोलो हरे राम। यह बात समझी। कोई बात है जो देव भी समझ नहीं सके। और तुम भी कहते हो। ''यह भी तुमने कह समझाया, कठिन उसी को पाना है।'' कठिन बात है। कोई सुगम बात नहीं है। ''वैरागी तो उस देखन हित जग में फिरत दीवाना है।'' वैरागी मुमुक्षी जिज्ञासी मस्त होकर आत्म दर्शन के लिए घूमते हैं। कोई जंगल में कोई नदी के किनारे बैठे हैं। हे यमराज! अब तो मुझको ज्यादा निश्चय हुआ है कि यह बात तो मेरे को जरूर सुननी है। ''तुमको तजकर ऐसा वर मैं, और किसी से पाऊँगा।'' ये बात तुम्हें छोड़कर फिर मुझे कौन बतायेगा? ''सारी दुनिया खोज-खोज के वृथा जनम गंवाऊँगा।'' सारी दुनिया में भटकूंगा। कौन मुझे यह बात बतायेगा? वेदान्त की बात बहुत कठिन बात है। प्रेम से बोलो हरे राम।

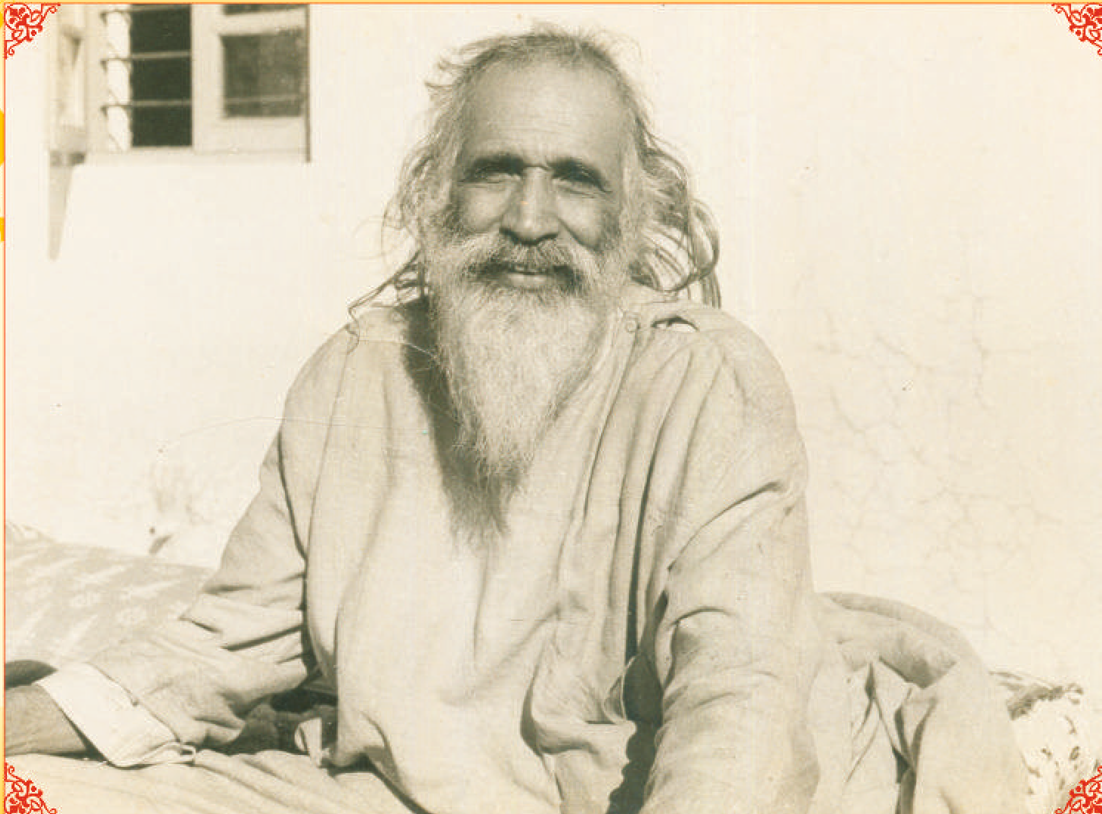

''जो जन के बंधन हरे, सो साधू कोई एक।
क्रिया कर्म जोड़न विषे, जन समर्थ अनेक।''

यह नीति शास्त्र कहता है-जो महात्मा तेरे बंधन तोड़े। मोह, आशा, मान, तितिक्षा, क्रोध के बंधन तोड़े वो कोई कोई है। बाकी क्रिया-कर्म जोड़ने में अनेक समर्थ हैं किस तरह :-

''दादुर कर कुख भरण में, तत्पर नाग अनेक।
समर्थ धरनी धरण में, शेषनाग ही एक।।

मेंढक कहो, दादुर कहो, बेंढ़कुली कहो। प्रेम से बोलो हरे राम। उसको खाने के लिए नाग बहुत है। समर्थ। परन्तु धरती को उठाने में शेषनाग एक ही है।

''उदर भरण तत्पर भये, बेखी संत अनन्त।
जगत जलधि के तरन में, विरला को इक सन्त।।

अपने स्वार्थ, सुख, लालच के वास्ते अनन्त महात्मा है। परन्तु संसार-सागर को तारने के लिए कोई-कोई महात्मा है। निष्कामी निर्मानी अभेदी निरपक्षीय कोई-कोई महात्मा है।

श्लोक: "शैले-शैले न माणिक्यं, मुक्ताकं न गजे-गजे।
साधु नहि सर्वत्र, चन्दनं न वने-वने।।

सभी वनों में चंदन नहीं है, सभी हाथियों के मस्तक पर मोती नहीं होते । सभी पहाड़ों में माणक नहीं होते हैं। सभी शहरों में महात्मा नहीं होते हैं। कहीं-कहीं होते हैं, ! प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन! महात्माओं का संग कर। अभेदी महात्मा का। भेदवादी का संग ऐसा है जो आत्मा का ज्ञान साक्षात होवे, वह ही नास हो जावेगा क्योंकि खण्डन बहुत है। अगर खण्डन करे तो भगवान का खण्डन कर दें। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन! विश्वास निश्चय

कर। जैसे-सदाशिव पार्वती को बोल रहा है। पार्वती विश्वास निश्चय कर। कौनसा निश्चय कर -

भजन: अमर आत्मा देह अनात्म, आत्म रूप तुम्हारा।
आत्म दृष्टा देह दृश्य है, आत्म सब से न्यारा।
जाग्रत स्वपन सुषोप्ति का, इक आत्म है आधारा।
इन्द्रिय अगोचर आत्म है जिहं, मन बुद्धि लखे न बानी।।
शंकर बोले पार्वती सुन, अमर कथा सुखदानी।
जांके श्रवण से कट जावे, कठिन काल की कानी।।

सदाशिव कहते हैं-हे पार्वती! आत्मा सच्चिदानंद रूप है। अमर है, अविनासी है। यह शरीर नासी है एक दिन शमशान में जल जायेगा, मिट्टी हो जायेगा। प्रेम से बोलो हरे राम। इतना कथा का प्रसंग करके आये हैं। ''आत्म

दृष्टा देह दृश्य है, आत्म सब से न्यारा।'' देह का दृष्टा है-साखी चेतन। यह देह अलग है, आत्मा से। प्रेम से बोलो हरे राम । ''जाग्रत स्वपन सुषोप्ति का।'' तीनों को जानते हैं। जो बुद्धि को जानता है। उसको बुद्धि जानती है जो दुनियां में देखते हैं सारा मेलाप का रंग फैला हुआ है। शरीर जड़ हैं। ये मेलाप है। सारा काम मेलाप का है। बुद्धि को तेज करना! जितने प्रेमी बैठे हो। प्रेम से बोलो हरे राम। कार्तिक की आरती करते हैं। गुरु-ग्रंथ की आरती करते हैं। प्रेम प्रकाश ग्रंथ की आरती करते हैं। तो तीन आरतियां बनाके लाते हैं। एक ही अगर आरती करे तो क्या बुझ जायेगी क्या ? एक किसी की आरती की तो वह जूठी हो गयी। बुद्धि को तेज करना! अगर किसी को भी इसमें शंका हो तो कल लिखके आना। कल आकर के पूछना। यह जूठी किसने की? शरीर आत्मा का सम्बन्ध है। यह सब आपस में सम्बन्ध है। शरीर साखी, चेतन का सम्बन्ध है।

बुद्धि साखी चेतन को देखती है। साखी चेतन बुद्धि को देखता है। कहते हैं-बुद्धि भगवान है। व्यवहार का ज्ञान और परमार्थ का ज्ञान बुद्धि के अधीन है। ''अगम-अगोचर रूप तुम्हारा।'' यह स्वरूप है उसको पहचान, अगर नहीं पहचानोगे तो अन्तकाल में तुम को रोना पड़ेगा कि मैंने कुछ भी नहीं किया। फिर अन्तकाल में रोयेगा। साहब कहते हैं -

सहस्रदान दे इन्द्र रो आया, परसराम रोई घर आया।
अजय सु रोये भिक्षा खाय, ऐसी दरगह मिली सजाय।
रोवे राम निकाला भया, सीता लक्ष्मण बिछड़ गया।
रोवे दहसिर लंक गंवाय, सीता आंदी डौंरू वांइ वाय।
रोवे जनमेजाइ खुइ गया एके कारण पापी भया।
रोवे पाण्डव भये मजूर, जिनके स्वामी रहत हजूर।
रोवे शेख मशाइक पीर, अन्तकाल मत लागे भीर।।

फिर बाद में रोना पड़ेगा। अगर अपने को नहीं पहचानेगा, तो फिर रोना पड़ेगा। मैं हूं कौन ? यह कथा कहां छोड़ी, याद है। स्त्री के कारण रोना पड़ा। प्रेम से बोलो हरे राम। साहब कहते हैं :-

जुआ में युधिष्ठर महाराज ने हराया। द्रोपदा को दाव पर रखा। कोई भाई-माई जुआ मत करना।

जूप संग ते धर्म तात अति विपति सही बन।
मांस संग इक भूप भयो बक, श्राप दियो मुनि।
यादव नन्दन नास भये, मधुपान करियो जब।
क्रीचक थे शत भ्रात, काम कर नाश भये सब।
मृगया कर परीक्षित हत्यो, चोरी करी शिव भूप हत।
पुनि पर नारी की प्रीति कर शीश दिये दश लंकपति।।

शराब पीने की आदत, जुआ खेलने की आदत ये सभी खराब आदतें हैं। ये सभी बंद करो। बहुत कहते हैं-सतहं आती है। आज पत्ते को तो हाथ लगा, सगुन तो कर। ताश को हाथ लगाया तो २२ महीने के कर्म सारे नाश हो जायेंगे। ये मौका है। मौके का दान, पुण्य कर्म ऐसे फूलते हैं जैसे-सभा में द्रोपदा के चीर बढ़े। राजा चूड़ाला शिखरध्वज की कथा बहुत सुन्दर है। बाहर रखी है उसमें चूड़ाला कहती है। हे राजन्। जब मंदराचल वन में पहुंच गये। राजा को विश्वास बंधाकर बोली। हे राजन्!

''जो ही पूजने योग्य होवे, तिस निर आदर करते हैं।
वो जन सूख कहीं ना पावत, अन्त दु:खी हो मरते हैं।''

जो पूजने योग्य हैं। जैसे-बच्चों के लिए घर में माता-पिता पूजने योग्य हैं। स्त्री के वास्ते पतिदेव, सास-ससुर पूजने योग्य हैं। देवी-देवता भी पूजने

योग्य हैं। कभी भी जुआ नहीं करना। बासी रोटी मत खाना। प्रेम से बोलो हरे राम। देवी की शीतला की पूजा करो, पाठ करो, हवन करो, सत्संग करो। अन्त में १२ वर्ष का बनवास मिला, पाण्डव को। फिर दस्तावेज लिखा। दस्तावेज लिखकर पाण्डव चले। पैर नंगे रोते-रोते गये। अन्त में १२ साल बनवास भुक्ता। भूख-प्यास तकलीफें सही। १ वर्ष अज्ञात वास। कहां रहे? राजा विराट के पास मजदूरी की। द्रोपदा बान्ही बनी बर्तन मांजे, झाड़ू लगायी। प्रेम से बोलो हरे राम। जिन्हें अनन्त लोग पूजते थे। वह भी झाड़ू लगाने लगी। ये सारा काम जुआ का है। भीमसेन रसोई बनाने लगा। इसी तरह कोई कहां, कोई कहां। मजूरी करने लगा। कमाने लगा। एक दिन प्रभु की लीला राजा विराट के सौ साले थे क्रीचक। एक क्रीचक जिसकी द्रौपदी पर नजर। प्रेम से बोलो हरे राम। नजरबद। दृष्टि बद हो गई। प्रेम से बोलो हरे

राम। द्रौपदी ने कहा-खबरदार! द्रौपदी के पांच देवता, अगर उनको पता चला तो वे तुझे मार डालेंगे। द्रौपदी को इतना तंग किया। द्रौपदी रात को रो पड़ी। युधिष्ठर से कहा-सभी पांच पाण्डव और द्रौपदी रात को १२ बजे एक साथ होकर बैठे। द्रौपदी ने सारी बात पाण्डवों को बतायी। उस समय सारे पाण्डव रोने लगे। साहब कहते हैं - ''रोये पाण्डव भये मजूर, जिनके स्वामी रहत हजूर।'' स्वामी कृष्ण भगवान का जिनके ऊपर हाथ था। कथा बड़ी है। आखिर भीमसेन ने कहा - ११ बजे पूरे नृत्यशाला में मैं बैठी रहूंगी, तू पूरे ११ बजे आना। उसको कह देना। प्रेम से बोलो हरे राम। ऐसे बोलकर तू अपने मकान पर चली जाना। मैं अपने आप सम्भाल लूंगा। क्रीचक से द्रौपदा ने बोला-कि बहुत दिन तुझे सताया है। हम तेरे मजूर हैं। ११ बजे पूरे नृत्यशाला में आ जाना।

शाम को पाठशाला बन्द हो जाती हैं मैं नृत्यशाला में बैठी रहती हूं। कोई भी नहीं जाता है। मैं दरवाजा खोल दूंगी। बड़ा ही खुश हुआ। १० :३० बजे भीमसेन साड़ी बांधकर शाला में बैठ गया। ११ बजे आया क्रीचक दरवाजा खोला। भीमसेन ने कहा-जहां पर चाहिए वहां पर बैठ जा। भीमसेन ने दरवाजा बन्द कर दिया। उसे गले से पकड़कर गला ऊपर करके उसको दबा दिया। इतना तो बलवान था। राजा के सौ साले उधर थे। भीमसेन ने क्या किया।

सभी क्रीचकों को जला दिया। प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो। साहब कहते हैं उधर पाण्डव रोये हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। फरीद साहब रोया कैसे ? जब योग तप किया। दर्शन नहीं हुआ, ऐसे शास्त्र कहते हैं-कौओ पास में आये। कौओं को कहने लगा।

कागा ये तन खाइयो चुन चुन खाईयो मांस
पर दो नैना मत छूओ मुझे पिआ मिलन की आस

खा जाओ, पर मेरी आंखों को मत खाना। मैं भगवान का दर्शन करूं फिर भली मेरी आंखें खा जाना। प्रेम से बोलो हरे राम। कोई दु:ख में रोया, कोई प्रेम में रोया, कोई मर्यादा के कारण रोया है। पर सब रोये हैं। आजकल हिन्दू जाति उनको धर्म विद्या है ही नहीं । प्रेम से बोलो हरे राम। याद करना जिन्होंने पाया हैं। उन्होंने हिन्दू धर्म में से ही पाया है। सभी ने हिन्दू धर्म में से पाया है। प्रेम से बोलो हरे राम।

हद चले सब कोय, बेहद चले न कोय।
बेहद के मैदान में, खड़ा कबीरा रोय।।

साहब कहने लगे - मर्दाना शेखनपीर ऐसे रोये हैं।

''रोये राजे कन फड़ाय।''

गोपीचन्द भर्तृ हरि के जब कान चीरे। तो आंखों में से पानी आ गया।

गोपीचन्द राणी के पास भिक्षा लेने लगे तो राणी रोने लगी। परन्तु गोपीचन्द भी रो पड़ा। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन! अगर रोने से छूटे तो अपने निज स्वरूप को जान। आत्मा को जान, तो रोने से छूटे। नहीं, तो रोना पड़ेगा। अनन्त जन्मों में भी रोना पड़ेगा। आत्मा को पहचान। महाराज कहने लगे वो है कहां ?

ब्रह्म आत्मा स्थित है, नित अपने महिमा माहीं।
बन्ध मोक्ष ते असंग आत्मा, आत जात कहं नाहीं।
पांच भूत प्रकृती सारी स्पर्श करत न ताहीं।
अगम अरूप अनूप अनादी वेदनि गति नहिं जानी।।

हे पार्वती! आत्मा ब्रह्म, एक तो ब्रह्म नाम है व्यापक का, और आत्मा नाम है अपने आप का। ब्रह्म मतलब समष्टि। अपने आप में स्थित है। बंधन

मोक्ष से असंग है। पांच भूत पच्चीस प्रकृति माया में रहता है पर उसको स्पर्श नहीं होता है। प्रेम से बोलो हरे राम। जैसे-कमल फूल जल में रहता है वैसे यह रहता है। प्रेम से बोलो हरे राम। जैसे-महात्मा ज्ञानवान रहते हैं। कैसे रहते हैं?

कमल सीप जल जुदा वसे, मणि ज्यूं अहि मुख माहीं
बड़वानल पुन बीज, वारि मध भीजे नाहीं
दर्पण माहिं प्रतिबिम्ब, सून सबहीं घट न्यारी
लोई रंगे न सूत, देख अचरज यह भारी
अठारह भार अग्नि इक, सूर सलिल ले दे जुदा
रज्जब त्यूं साधू संगति, मिले अमल पाया मुदा

जो ब्रह्मज्ञानी-भगवान एक रूप हैं। वो कैसे रहते हैं। जैसे-कमल जल में रहता है। जितना जल बढ़ेगा। कमल डूबेगा नहीं! सीप रहे खारे समुद्र में

वहां का, जल पीती नहीं हैं। बरसात का पीती है। विषय भोग का, पाप का पानी नहीं पीते है। सच का, प्रेम का ग्रंथों का पानी पीते हैं। प्रेम का पानी पीते हैं। ''मणि ज्यों अहि मुख माहीं।''

अहि नाम है सर्प का भुजंग कहो, नाग कहो। जहर होता है उसके मुख में। लेकिन वो मणि को स्पर्श नहीं करता है। उसी तरह महात्मा संसार में रहते हैं। लेकिन मणी की तरह उन पर असर होता नहीं। बड़वानल अग्नि सागर में रहती है। लेकिन सागर अग्नि को बुझा नहीं सकता है। प्रेम से बोलो हरे राम। बिजली बादलों में होती हैं तो बरसात पड़ती है, पर जैसे-जोर से चमकती है तो बरसात भी जोर से पड़ती है। तो बिजली भी जोर से चमकती है बिजली को बुझा सकता है पानी, परन्तु, बुझा नहीं सकता। इसी तरह महात्मा क्रोध, काम, लोभ, मोह, अहंकार विकार रूपी संसार के जल में ज्ञान रूपी अग्नि का

चिमकार देते हैं। जिसको हम बुझा नहीं सकते हैं। जैसे-''दर्पण माहीं प्रतिबिम्ब''। आरसी में परछाईं दिखायी देती है प्रतिबम्ब। वो कोई आरसी में फंसा हुआ है क्या? लेकिन नहीं। ''सुन सबही घट न्यारी।'' आकाश सभी घटों में है। पर न्यारा है।

''लोई रंगे न सूत देख अचरज ये भारी।''

उसकी ये लोई में अगर सूत की तंद होती है तो सारे अन्दर में रंग चढ़ जायेगा। पर सूत की तंद पधरी (अलग) दिखेगी। वैसे संसार में भोग विषयों का रंग अज्ञानी जीवों पर चढ़ जाता है। वो महात्माओं पर ये रंग नहीं चढ़ता है। प्रेम से बोलो हरे राम। सूरज पानी को भाप के रूप में ऊपर ले जाये।

''सूर सलिल लेदे जुदा।''

क्या उसमें सूरज फंसा हुआ है? इस तरह संसार में भगवान संत महात्मा रहते हैं।

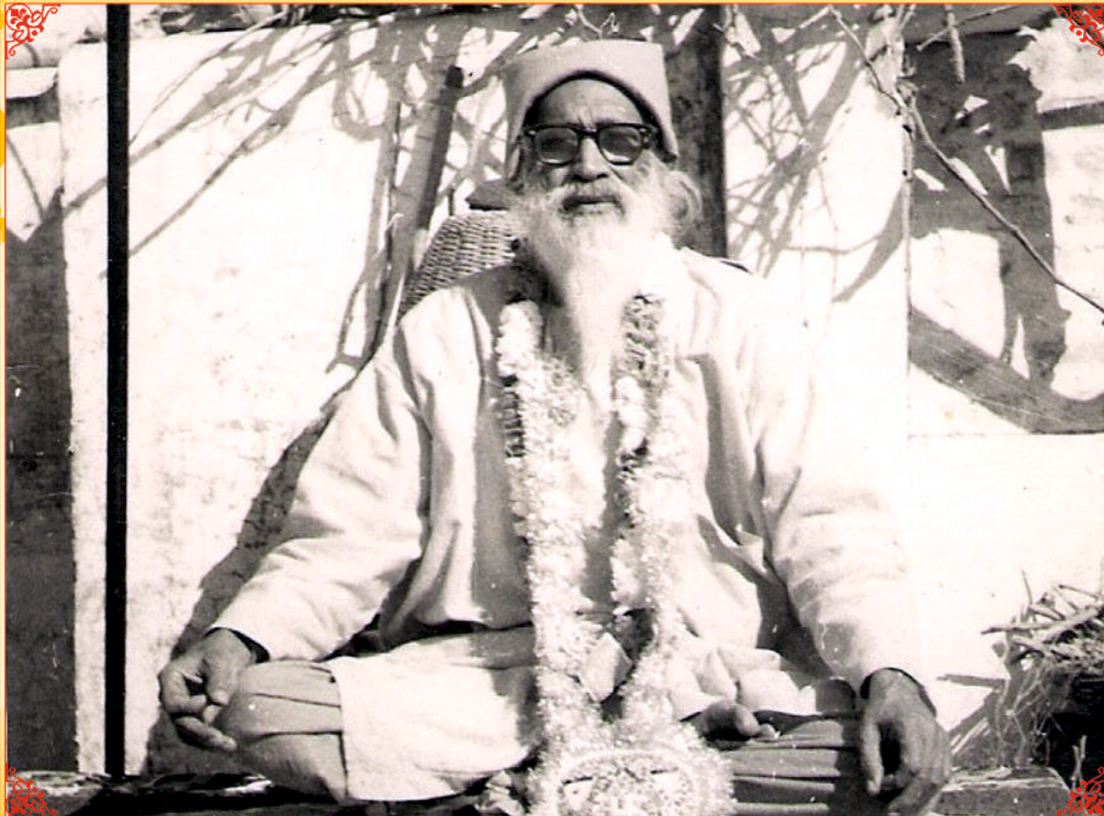

पांच तत्व प्रकृति सारी, परस सके नहिं ताहीं।''

एको रूप जिसकी उपमा नहीं कही जाती है। ''वेद गति नहीं जानी।''

वेद भी कह-कह कर चुप हो जाते हैं आगे चल नहीं सकता है। निर्वाण हो जाता है। प्रेम से बोलो हरे राम। साक्षी में लीन हो जाता है।

एक घर दोइ घर तीन घर चार घर,
पांचां घर तजे तब छठा घर पाइये।
एक-एक घर के आधार एक-एक घर,
एक घर निर्धार आप ही दिखाइये।।
सो तो घर साक्षी रूप घर-घर में अनूप,
तहां पर मध्य कोई दिन न ठहराइये।
तहां आगे साक्षी न असाक्षी हूं सुन्दर कछु,

वचन अतीत कहूं आय नहिं जाइये।।
तहां घर मध्य कोई दिन न ठहराइये

तहां आगे साक्षी न असाक्षी ही सुन्दर कछु वचन अतीत कहूं आय नहीं जाइये वो तो घर साखी रूप घर-घर में अनूप साखी भी प्रेम से बोलो हरे राम। साखी भी गुम है।

भजनः गाथा सुनते पार्वती को, आ गई निद्रा वाहीं।
सावधान हो हूं हूं करके तोते सुन लई ताहीं।
मर्म न जाना महादेव था मस्त मौज के माहीं।
शंकर पूछा गिरिजा बोली मैं निद्रा उरझानी।
शंकर बोले पार्वती।

गाथा सुनते-सुनते पार्वती को निद्रा आ गयी। घोंसले में बैठा तोता, हूं हूं

करके तोते ने कथा सुनली। जैसे-बाग में मैना बोलती है। ''ये मर्म न जाना महादेव था मस्त मौज के माहीं।'' ये मर्म, महादेव को पता था कि पार्वती हूं हूं कर रही है, तोते का पता नहीं था। जब पांच, साढ़े पांच बजे का शुमार हुआ तब प्रातः हुई। कथा पूरी हुई। सदा शिव ने कहा - नेत्र खोलकर, पार्वती कथा सुनी? देखा तो आंखों में अभी भी नींद भरी पड़ी है। कथा सुनी? बोली-मेरे को नींद आ गई । किस समय? पूछा बोलती है जब तुमने कहा-अमर आत्मा देह अनातम, आत्म रूप तुम्हारा।'' ये बात मुझे समझ में नहीं आयी और थकावट भी थी। उस समय सो गई। बोला-उस समय तो १ बजे का शूमार था १२ बजे तो कथा शुरू हुई। बस १ घंटा। फिर बाद मे पांच घंटे जो कथा हुई। उसमें हूं हूं की, वो किसने की? मुझे मालूम नहीं। ये कौन था? सदाशिव ने देखा क्या कहे?

भजन: कहे टेऊँ शुक गाथा सुनली, भेद शम्भू ने पाया।
तोते के तब मारन कारन डण्डा ले उठ धाया।
उड़के तोता वेद व्यास के त्रिया वदन समाया।
व्यास वचन सुन तोते को तज चले शंभू सैलानी।।

कह टेऊँ शुक गाथा सुन लई। सत्गुरु महाराज ने कहा- तोते ने कथा सुनी। भेद शंभु ये पाया। तोते ने आलणे (घोंसले) में बैठा है। इसी ने हूं हूं की है। वह समझ गया। तोते को तब मारण कारण, डण्डा उठ ले धाया। डण्डा लेकर तोते को कहने लगे। डाकू! चोर! खबरदार! अमरकथा तूने सुनी है? हूं हूं, जी जी की है। तोता आलणे (घोंसले) में से उड़कर आकाश में कहता चला शिवोहम्! शिवोहम्! आगे तोता पीछे सदाशिव और पार्वती पीछे भागने लगे। प्रेम से बोलो हरे राम। सदाशिव कहने लगे चोर! तू कहाँ जायेगा? चलते-चलते प्रभु की लीला वेद-व्यास महाराज उपनिषद की कथा कर रहा है सभा लगी

पड़ी है। तोता वहां जाकर पहुंचा। तोते ने विचार किया। सदाशिव पास में आ गया है। अब मैं कहां जाऊं? वेद व्यास की पत्नी बैठी थी। सूक्ष्म रूप धारण करके उसके पेट में चला गया। सदाशिव आया डण्डा लेकर। वेदव्यास प्रभु ने कहा-बैठो। उन्होंने कथा बंद करी तो शिव जी बोले - बैठा है चोर! चोर को निकालो बाहर। वेदव्यास बोले कहां? - तेरे स्त्री के पेट में है निकाल, नहीं तो तोता भी मर जायेगा। तेरी स्त्री भी मर जायेगी। दोनों का सत्नाम साक्षी। निकाल बाहर। वेदव्यास ने कहा बात तो बताएं- सारी बात नारद से लेकर बता दी। सारी हकीकत बताने के बाद वेद-व्यास हंसकर कहने लगे कि अमर कथा तो कई महात्मा बताते हैं। मैं भी अमर कथा कह रहा हूं। निज तत्व वेदान्त की। आपने बताई तो क्या हुआ। अमर कथा कोई सुनता ही नहीं हैं सदाशिव ने कहा- तुम्हारी कथा कोई मेरी जैसी है क्या? वेद व्यास कहने लगा-कि प्रभु आपकी कथा कौनसी है? सदाशिव ने कहा - मेरी कथा जो सुनेगा वह अमर हो

जायेगा, वो मरेगा नहीं। किसी की ताकत नहीं है उसको तीनों लोकों में मार सके। बोला-सच्ची बात है? बोला - क्या मैं तुमसे झूठ बोल रहा हूं? सच्ची कह रहा हूं कि मेरी कथा जो सुनेगा वह मरेगा नहीं, फिर उस तोते को मार रहे हो तो कैसे मरेगा ''व्यास वचन सुन तोते को तज, चले शंभु सैलानी।'' शम्भू सदा सैलानी थे पार्वती को कैलाश पर लेकर जाते रहे। प्रेम से बोलो हरे राम। पुराण कहते हैं। १२ साल तोता माता के उदर में रहा है एक दिन वेद व्यास महाराज कहते हैं कि हे पुत्र! तू जन्म ले तो मैं एक बार दर्शन तो करूं। ये मोह। दर्शन तो करूं। तोता तब अपने पिछले जन्म की बात सुनाता है कि हे पिता! मैंने बहुत दु:ख पाया है। चल नहीं सकता। दांत टूट गये, बीमार हो गया। मैं जंगल में था खाना मिले तो खाता हूं, नहीं तो भूखा। पानी मिलता नहीं। मेरे पीठ पर फुन्सी होने लगी। काग मेरे को आकर खाने लगे। जैसे-मैं भागूं तो काग भी मेरे पीछे भागने लगे। प्रेम से बोलो हरे राम। एक दिन मुझे प्यास लगी। कागों ने भगाया।

तो एक नदी दिखायी दी। थोड़ी वहां पर कीचड़ थी। वहां पर दल-दल भी था तो उसमें फंस गया। पेट आकर कीचड़ में लग गया। वहां पर काग ने आकर मुझे मार दिया। मैंने बहुत दु:ख पाये। ये प्रभु की माया ने भुलाया है। सभी ने दुख पाया है। वेद व्यास ने कहा - आज्ञा नहीं मानेगा? तू जन्म तो ले मैं दर्शन तो करूं पिता की बात तो सच्ची है क्यों कि नीति शास्त्र, धर्म शास्त्र कहते है।

सिर धर आयुस करहूं तुम्हारा, परम-धर्म ये नाथ हमारा।।

हे पिता! मेरा धर्म है माता-पिता की आज्ञा में रहना, स्त्री का धर्म है। अपने पति-देव की आज्ञा में रहना। कभी भी उल्लंधन नहीं करना चाहिए। शिष्य का धर्म है गुरू की आज्ञा को मानना, अगर उल्लंघन किया तो उसका उद्धार होना कठिन है बहुत कठिन है। यमराज परीक्षा ले रहा है। नचिकेता की। बहुत कठिन बात है परन्तु इसके बिना उद्धार भी नहीं होगा। जन्म-मरण चक्कर भी नहीं मिटेगा। कठिन बात है। यमराज कहता है। नचिकेता! ये बात

बहुत कठिन है, छोड़ दो। नचिकेता बोला तेरे को छोड़ दूं तो ये बात कौन बतायेगा? ये बात मेरे को जरूर सुननी है। यमराज कहते हैं उसको कोई लोभ दिया जाये तो हो सकता है छोड़ दे। तो कल लोभ-लालच नचिकेता को देगा और दिखायेगा। आप भाई-माई अपने मन पर साखी होना, कागज और पेन लेकर आना, लिखना या याद करना फिर मन से पूछना कि महात्मा से ये पदार्थ लें कि आत्मा का ज्ञान लें? ये कथा इधर रखते हैं। ये भजन उधर रख देता हूं। तोता कहता है, तेरी आज्ञा तो मानूंगा। परन्तु मेरी एक अर्दास है कबूल पड़े तो मैं जन्म लूं। तेरी आज्ञा मानूंगा अगर तेरी आज्ञा हो तो मैं एक बात बताऊं। पुत्र बता जो बात है। वह बाम मैं करने के लिए तैयार हूं। यह इधर अमर कथा रखते हैं। जो चार वचन सुने हैं। वह अपने मन को बताना। इसमें भगवान की आशीर्वाद होगी।